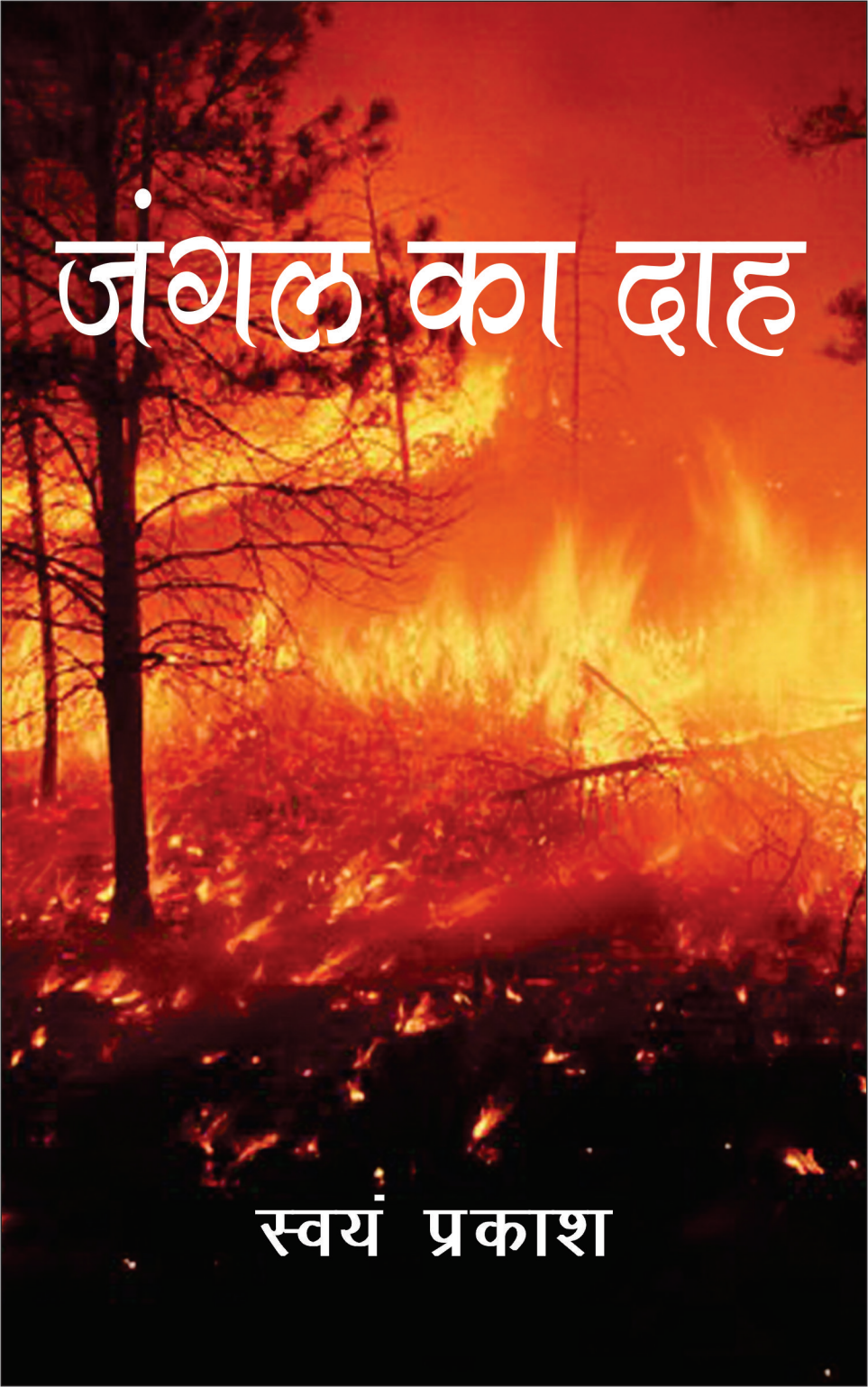
जंगल का दाह
स्वयं प्रकाश

जंगल का दाह

स्वयं प्रकाश

मामा सोन अपने समय के प्रख्यात धनुर्धर थे।

मामा सोन जंगल में रहते थे, लंगोटी लगाते थे और वनवासियों के बच्चों को तीर-कमान चलाना सिखाते थे। अपना धनुष और अपने बाण भी वह स्वयं बनाते थे। वनवासी खेती करना नहीं जानते थे। वहाँ ज़मीन ऐसी थी भी नहीं जिस पर आसानी से खेती की जा सके। उनकी आजीविका पशुपालन, वनोपज और शिकार से ही चलती थीं यह जरूरी था कि हम वनवासी, चाहे लड़का हो या लड़की, अपनी रक्षा और आजीविका के लिए तीर-कमान चलाना जरूर सीखे।

मामा सोन को बच्चे घेरे रहते। वनवासी मामा सोन की बहुत इज्जत करते और बच्चों को शिक्षा के लिए उनकी पास भेजते समय बहुत-सा अनाज और सूखा मांस, पशुओं की खाल, बांस से बनी घरेलू वस्तुएँ और जंगली कंदमूल वगैरह ले आते।

मामा सोन बच्चों के लिए उनकी कद-काठी और जरूरत के अनुसार तीर-कमान बनाते और सबसे पहले उन्हें चिड़ियों के नाम, आदतें, उनकी अपने के मौसम, बैठने के ठिकाने, उनकी प्रजाति की बढ़त-घटत का हिसाब और उनके खाद्य-अखाद्य होने की जानकारी यह सब अपने शिष्यों को बताते। खुद आगे-आगे चलते और थोड़े ही दिनों में अपने शिष्यों को जंगल के चप्पे-चप्पे से परिचित करा देते। कुछ ही वर्षों में उनके शिष्य इतने पटु हो जाते कि एक-एक तीर से चार-चार चिड़िया गिरा लेते।

मामा सोन अपने शिष्यों को तीर-कमान बनाना भी सिखाते। किस प्रकार शिकार के लिए कैसे तीर की जरूरत होगी, किस तरह का फाल चमड़ी को कितनी गहराई तक भेदेगा, कैसी प्रत्यंचा तीर को कितनी दूर तक फेंकेगी, वगैरह। सुना है मामा सोन को ऐसे तीर बनाना भी आता था जो लक्ष्य भेदकर वापस कमान में आ जाता था। देखा तो किसी ने नहीं, लेकिन इस पर अविश्वास करने का भी कोई कारण नहीं था।

धीरे-धीरे मामा सोन की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई।

एक दिन एक राजकुमार अपने नौकर-चाकर सैनिकों के साथ जंगल में शिकार खेलने आया। राजकुमार को न शिकार का कोई अनुभव था न उसमें पशु-पक्षियों के साम्राज्य में प्रवेश करने की विनम्रता थीं नतीजा यह हुआ कि राजकुमार और उसके साथी हो-हल्ला करते हुए और ललकारते हुए जंगल में घुसे। चिड़ियों ने इन अजनबियों की अजीबोगरीब हरकतों को संदेह के साथ देखा और इधर से उधर तक उड़कर और शोर मचाकर सारे जंगल को सावधान कर दिया। आसन्न अयाचित खतरे की सूचना पाकर सारे पशु-पक्षी अपनी-अपनी कोटरों खोहों-बिलों-घोंसलों-गुफाओं में दुबक गये। राजकुमार और साथी शिकार की तलाश में खाली हाथ भटकते रहे।

लेकिन शेर किसी से क्यों डरे? तू राजा है तो हम भी राजा है। तू राजा का बेटा है तो हम भी हैं।

तो शेर पहुँच गया राजकुमार के सामने और सहज अभिवादन के भाव से दहाड़ा। खुले शेर को देखकर और उसकी दहाड़ सुनकर राजकुमार के सारे साथी भाग छूटे और राजकुमार चीखने-चिल्लाने लगा। राजकुमार को चीख-चिल्लाहट को आक्रमण की ललकार समझकर शेर ने राजकुमार पर हमला कर दिया।

ठीक इसी समय झाड़ी के पीछे छिपे मामा सोन के एक शिष्य ने शेर पर तीर चलाकर उसका ध्यान बटाँ और राजकुमार को सम्हलने का मौका दे दिया। वह शेर को भगाता-भगाता राजकुमार से बहुत दूर ले गया। इस तरह उस दिन राजकुमार की जान बच गयीं मामा सोन के शिष्यों ने राजकुमार की सेवा-सुश्रूषा की और उसे सकुशल उसके राज्य में छोड़ आये।

राजकुमार ने घर जाकर सारी विगत राजा को बतायी तो राजा बहुत खुश हुआ और बहुत दुखी हुआ। खुश इसलिए हुआ कि उसे बेटे की जान बच गयी और दुखी इसलिए हुआ कि ये इतना बड़ा ढोर हो गया और अपनी खुद की भी रक्षा नहीं कर सकता तो मेरे राज्य की और राज्यवासियों की रक्षा कैसे कर पाएगा? उस दिन राजा ने राजकुमार को खूब लताड़ा।

राजा की लताड़ सुनकर राजकुमार सोच में पड़ गया और आखिर उसने धार लिया कि वह भी धनुर्विद्या सीखेगा और मामा सोन से ही सीखेगा।